यूनिट 4 मनोवैज्ञानिक विकार
(Psychological Disorders)

असामान्यता एवं मनोवैज्ञानिक विकार के सम्प्रत्यय
(Concepts of Abnormality and Psychological Disorder)

असामान्यता का अर्थ (Meaning of Abnormality)

➤ प्रश्न : असामान्य व्यवहार क्या है?

➤ *अथवा*, असामान्यता से क्या समझते हैं?

उत्तर : असामान्य यानी abnormal शब्द ab + normal शब्दों के योग से बना है जिसका अर्थ away from normal यानी सामान्य से भिन्न या परे होता है। इस तरह असामान्य, सामान्य या औसत लोगों से, विचलन का सूचक है। असामान्य व्यवहार का तात्पर्य किसी व्यक्ति के व्यवहार के उस रूप से है जो अनियमित, असंगत अथवा प्रतिकूल है। ऐसे लोगों में अवसाद, चिन्ता इत्यादि मानसिक विकार की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

'असामान्यता' का सामान्य अर्थ व्यवहार के अनियमित प्रतिरूप (irregular or incongruous form of behaviour) ही स्पष्ट होता है तथा यह भी स्पष्ट होता है कि ऐसे व्यवहार सामान्य व्यवहार से अलग स्वरूप (deviated form) के होते हैं। शाब्दिक अर्थ में असामान्यता का तात्पर्य 'जो नियमित नहीं है' अथवा जिनके व्यवहार सामान्य से विचलित हैं। (Those whose behaviours are deviant from normals.)।

असामान्य व्यवहार के कारक
(Causal Factors associated with Abnormal Behaviour

▶ प्रश्न : असामान्यता के पूर्वप्रवृत कारण से क्या तात्पर्य है?

▶ *अथवा*, असामान्यता के पूर्वप्रवृत कारण का क्या अर्थ है?

उत्तर : व्यक्ति में पाये जाने वाले वे रोगोन्मुख गुण जो उसे किसी मनोरोग के प्रति संवेदनशील बनाते हैं, असामान्यता के पूर्व-प्रवृत्ति कारण कहलाते हैं। ये गुण व्यक्ति में पहले से उपस्थित होते हैं तथा वातावरण या अत्यधिक तनाव के कारण यदि समायोजन नहीं हो पाता है तो व्यक्ति एक निश्चित बिन्दु पर जाकर टूट जाता है तथा उसका व्यवहार असामान्य हो जाता है।

असामान्यता के पूर्वप्रवृत कारण शारीरिक भी हो सकते हैं और मानसिक भी। जैसे - विशेष शारीरिक बनावट, निराशावादी, चिन्ता की प्रवृति, स्वयं को टूटा हुआ महसूस करना आदि। ऐसे लोगों में मानसिक अवसाद तथा चिन्ता मनोविकार होने की संभावना प्रबल होती है। मनोवैज्ञानिक पदावली में इसे *डाइथेसिस* के नाम से जाना जाता है।

→ प्रश्न : मानसिक विकृतियों के मनोवैज्ञानिक कारकों पर प्रकाश डालें।

उत्तर : मनोजात (Psychogenic) दृष्टिकोण के अनुसार असामान्य व्यवहारों या मानसिक विकृतियों की उत्पति का मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक होता है। हालाँकि, मानसिक विकारों के विशिष्ट मनोवैज्ञानिक कारण के बारे में स्पष्ट रूप से बता पाना काफी कठिन होता है, क्योंकि, प्रथम तो, ऐसे मनोवैज्ञानिक कारकों की पहचान मुश्किल होती है, दूसरे, ऐसे कारक आंतरिक और वैयक्तिक होते

Scanned by CamScanner

हैं तथा तीसरे, मनोवैज्ञानिक कारक अनिश्चित तथा परिवर्तनशील होते हैं। फिर भी, मनोवैज्ञानिक उपागम के समर्थक मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण के आधार पर कुछ मनोवैज्ञानिक कारकों की पहचान की है, जो निम्नलिखित हैं-

(i) दीर्घकालीन सांवेगिक वंचना

(ii) मानसिक आघात या सदमा

(iii) बाल्यावस्था में मातृत्व का अभाव

(iv) दोषपूर्ण पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था

(v) अनुपयुक्त पालन-पोषण जैसे- अतिशय सुरक्षा, बच्चों से अयथार्थ अपेक्षाएँ रखना, अत्यधिक उदारता एवं अतिशय आसक्ति

(vi) दोषपूर्ण शिक्षण (vii) दोषपूर्ण व्यवहार प्रतिरुपों का प्रबलन (viii) अचेतन प्रेरकों की प्रबलता (ix) अस्मिता का विरुपण (x) दोषपूर्ण संचार।

प्रश्न : मानसिक विकृतियों के जैविक कारक क्या हैं?

***अथवा*, मानसिक विकृतियों के कुछ जैविक कारकों का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर : आसामान्य व्यवहार कुछ जैविक कारकों से भी होते हैं जिनसे मानसिक विकृतियाँ जन्म लेती हैं। आनुवंशिक दोष, गुणसूत्रीय असामान्यताएँ, मस्तिष्क की दोषपूर्ण कार्य क्षमता आदि ऐसे ही जैविक कारक हैं। यदि माता-पिता से संतान को दोषपूर्ण जीवन मिलते हैं तो वे शारीरिक या मानसिक विकार उत्पन्न कर सकते हैं। जैसे- मनोविदालिता एवं उत्साह-विषाद मनोविकृति का सशक्त आनुवंशिक आधार है। मस्तिष्कीय क्षति एवं स्नायु संचरण सम्बन्धी अक्षमता बहुत अंश तक विभिन्न प्रकार के लक्षणों एवं मानसिक विकारों के लिए उत्तरदायी हैं।

प्रश्न : असामान्य व्यवहार किसे कहते हैं? असामान्य व्यवहारों के कारणों की विवेचना कीजिए।

***अथवा*, असामान्यता के कारणों का वर्णन कीजिए।**

***अथवा*, असामान्य व्यवहार से क्या तात्पर्य है? असामान्य व्यवहार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों की विवेचना कीजिए।**

***अथवा*, मानसिक विकृतियों के सामाजिक-सांस्कृतिक कारण क्या है?**

उत्तर : असामान्य का अंगरेजी शब्द Abnormal है जो Anomalous शब्द से बना है जो दो शब्दों Ano एवं Malous का योग्य है। Ano का अर्थ नहीं तथा Malous अर्थ नियमित या संगत होता है। इस अर्थ में असामान्यता का तात्पर्य किसी व्यक्ति के व्यवहार के उस रूप से है जो अनियमित अथवा असंगत है। ऐसे व्यवहार सामान्य व्यवहार से अलग स्वरूप के होते हैं। जिस व्यक्ति का व्यवहार समाज द्वारा स्वीकृत आदर्श मानदंड के अनुरूप होता है उसे सामान्य कहते हैं तथा इस आदर्श से प्रतिकूल या विचलित व्यवहार प्रतिरूप को असामान्य की संज्ञा दी जाती है।

असामान्य व्यवहार के कारण : निम्नलिखित कारक असामान्य व्यवहार के विकास में योगदान देते हैं –

1. जैविक कारक : इसमें आनुवंशिक दोष, गुणसूत्रीय गड़बड़ियाँ, अन्तःस्रावी व्यवधान, शरीर रचना की दुर्बलताएँ, मस्तिष्क की क्रियाप्रणाली में अव्यवस्था एवं शारीरिक वंचन आदि शामिल हैं।

2. मनोवैज्ञानिक कारक : असामान्य व्यवहार के जन्म में वंचन, मानसिक आघात, प्रतिबल आदि मनोवैज्ञानिक कारक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनुपयुक्त पालन-पोषण जैसे- अतिशय सुरक्षा, बच्चों से अयथार्थ अपेक्षाएँ रखना, अत्यधिक उदारता एवं अतिशय आसक्ति, असंगत पुरस्कार एवं दंड, दोषपूर्ण संचार एवं अवांछित माता-पिता के मॉडल असामान्य व्यवहार के विकास के साथ महत्त्वपूर्ण ढंग से सम्बन्धित पाये गये हैं।

Scanned by CamScanner

हैं तथा तीसरे, मनोवैज्ञानिक कारक अनिश्चित तथा परिवर्तनशील होते हैं। फिर भी, मनोवैज्ञानिक उपागम के समर्थक मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण के आधार पर कुछ मनोवैज्ञानिक कारकों की पहचान की है, जो निम्नलिखित हैं-

(i) दीर्घकालीन सांवेगिक वंचना

(ii) मानसिक आघात या सदमा

(iii) बाल्यावस्था में मातृत्व का अभाव

(iv) दोषपूर्ण पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था

(v) अनुपयुक्त पालन-पोषण जैसे- अतिशय सुरक्षा, बच्चों से अयथार्थ अपेक्षाएँ रखना, अत्यधिक उदारता एवं अतिशय आसक्ति

(vi) दोषपूर्ण शिक्षण (vii) दोषपूर्ण व्यवहार प्रतिरुपों का प्रबलन (viii) अचेतन प्रेरकों की प्रबलता (ix) अस्मिता का विरुपण (x) दोषपूर्ण संचार।

▶ **प्रश्न : मानसिक विकृतियों के जैविक कारक क्या हैं?**

▶ ***अथवा,* मानसिक विकृतियों के कुछ जैविक कारकों का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर : आसामान्य व्यवहार कुछ जैविक कारकों से भी होते हैं जिनसे मानसिक विकृतियाँ जन्म लेती हैं। आनुवंशिक दोष, गुणसूत्रीय असामान्यताएँ, मस्तिष्क की दोषपूर्ण कार्य क्षमता आदि ऐसे ही जैविक कारक हैं। यदि माता-पिता से संतान को दोषपूर्ण जीवन मिलते हैं तो वे शारीरिक या मानसिक विकार उत्पन्न कर सकते हैं। जैसे- मनोविदालिता एवं उत्साह-विषाद मनोविकृति का सशक्त आनुवंशिक आधार है। मस्तिष्कीय क्षति एवं स्नायु संचरण सम्बन्धी अक्षमता बहुत अंश तक विभिन्न प्रकार के लक्षणों एवं मानसिक विकारों के लिए उत्तरदायी हैं।

➔ **प्रश्न : असामान्य व्यवहार किसे कहते हैं? असामान्य व्यवहारों के कारणों की विवेचना कीजिए।**

▶ ***अथवा,* असामान्यता के कारणों का वर्णन कीजिए।**

➔ ***अथवा,* असामान्य व्यवहार से क्या तात्पर्य है? असामान्य व्यवहार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों की विवेचना कीजिए।**

➔ ***अथवा,* मानसिक विकृतियों के सामाजिक-सांस्कृतिक कारण क्या है?**

उत्तर : असामान्य का अंगरेजी शब्द Abnormal है जो Anomalous शब्द से बना है जो दो शब्दों Ano एवं Malous का योग्य है। Ano का अर्थ नहीं तथा Malous अर्थ नियमित या संगत होता है। इस अर्थ में असामान्यता का तात्पर्य किसी व्यक्ति के व्यवहार के उस रूप से है जो अनियमित अथवा असंगत है। ऐसे व्यवहार सामान्य व्यवहार से अलग स्वरूप के होते हैं। जिस व्यक्ति का व्यवहार समाज द्वारा स्वीकृत आदर्श मानदंड के अनुरूप होता है उसे सामान्य कहते हैं तथा इस आदर्श से प्रतिकूल या विचलित व्यवहार प्रतिरूप को असामान्य की संज्ञा दी जाती है।

असामान्य व्यवहार के कारण : निम्नलिखित कारक असामान्य व्यवहार के विकास में योगदान देते हैं –

1. जैविक कारक : इसमें आनुवंशिक दोष, गुणसूत्रीय गड़बड़ियाँ, अन्त:स्रावी व्यवधान, शरीर रचना की दुर्बलताएँ, मस्तिष्क की क्रियाप्रणाली में अव्यवस्था एवं शारीरिक वंचन आदि शामिल हैं।

2. मनोवैज्ञानिक कारक : असामान्य व्यवहार के जन्म में वंचन, मानसिक आघात, प्रतिबल आदि मनोवैज्ञानिक कारक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनुपयुक्त पालन-पोषण जैसे- अतिशय सुरक्षा, बच्चों से अयथार्थ अपेक्षाएँ रखना, अत्यधिक उदारता एवं अतिशय आसक्ति, असंगत पुरस्कार एवं दंड, दोषपूर्ण संचार एवं अवांक्षित माता-पिता के मॉडल असामान्य व्यवहार के विकास के साथ महत्त्वपूर्ण ढंग से सम्बन्धित पाये गये हैं।

Scanned by CamScanner

3. सामाजिक-सांस्कृतिक कारक : ये कारक भी मनोविकारों के उत्पन्न होने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे गरीबी, विकसित होनेवाले बच्चों को परिस्थिति से मुकाबला करने के लिए संसाधन से सज्जित नहीं कर पाती और फलतः उन्हें मनोविकारों के प्रति और संवेदनशील बना देती है।

असामान्यता का सम्प्रत्यय (Concept of Abnormality)

- प्रश्न : असामान्यता के सम्बन्ध में आधुनिक धारणा क्या है?
- *अथवा,* "असामान्य सामान्य से मात्रात्मक भिन्नता (Difference in degree) रखते हैं, न कि प्रकारात्मक (difference in kind)।" विवेचना करें।
- *अथवा,* असामान्य एवं सामान्य में मात्रा (Degree) का भेद है, प्रकार (kind) का नहीं। व्याख्या करें।

उत्तर : आधुनिक धारणा (Modern concept) : आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सामान्य एवं असामान्य के बीच कोई स्पष्ट और दृढ़ विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती, क्योंकि इनके बीच सापेक्षिक अन्तर (relative difference) पाया जाता है। असामान्यता वस्तुतः सामान्यता का ही बढ़ा या घटा हुआ रूप होती है। यही कारण है कि अनेक अवसरों पर असामान्यता की सही पहचान करने में भी दिक्कत होती है।

आधुनिक धारणा के अनुसार सामान्य एवं असामान्य – दोनों का उद्देश्य अभियोजन या सामंजस्य स्थापित करना होता है। अन्तर केवल उनके व्यवहारों की तीव्रता (intensity), बारंबारता (frequency) और अवधि (duration) में होता है। सामान्य और असामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों को उनकी चन्द विशेषताओं में भिन्नता के आधार पर प्रकारात्मक अन्तर अगर किया जा सकता है तो यह अन्तर सही अर्थ में मात्रात्मक (degree) ही होता है। अर्थात् "सामान्य एवं असामान्य में अन्तर मात्रा का होता है, न कि प्रकार का" (Abnormals differ from normals in degree and not in kind)।

- प्रश्न : सामान्य एवं असामान्य व्यवहार में अन्तर बतायें।
- *अथवा,* सामान्य एवं असामान्य व्यक्तियों की विशेषताएँ एवं अन्तर बतायें।
- *अथवा,* असामान्य व्यवहार की विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर : असामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों में कुछ विशिष्ट प्रकार की विशेषताएँ पायी जाती हैं जिनके आलोक में सामान्य एवं असामान्य में अन्तर किया जा सकता है। दोनों में पारस्परिक अन्तर बताने वाली ये विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. सामान्य व्यक्ति का व्यवहार परिस्थिति के अनुकूल होता है, जबकि असामान्य व्यक्ति का व्यवहार परिस्थिति के अनुकूल नहीं होता। जैसे सामान्य व्यक्ति सुखद परिस्थिति में खुश और दुःखद परिस्थिति में दुःखी होता है। परन्तु असामान्य व्यक्ति सुखद परिस्थिति में दुःखी और दुःखद परिस्थिति में सुखी होता है।

2. असामान्य व्यक्तियों में परस्पर मेलजोल का अभाव होता है, जबकि सामान्य व्यक्तियों में अच्छा आपसी मेलजोल होता है।

3. असामान्य व्यक्तियों में सूझ की कमी होती है, जबकि सामान्य व्यक्ति समयानुसार एवं परिस्थिति अनुसार निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

4. असामान्य व्यक्तियों में वास्तविकता के ज्ञान का अभाव होता है, जबकि सामान्य व्यक्तियों की चेतना शक्तियाँ सबल होती हैं।

5. असामान्य व्यक्ति का व्यवहार असंगत, उटपटांग, अनियमित और विभिन्न स्वरूप का होता है। ऐसे लोग बिना किसी उपयुक्त कारण के कभी रोते हैं, कभी हँसते हैं, कभी खुश दीखते हैं, तो कभी

Scanned by CamScanner

उदास हो जाते हैं। कभी-कभी अकारण ही आक्रामक व्यवहार भी करने लगते हैं। किन्तु सामान्य व्यक्ति के व्यवहार सुसंगत, नियमित और उपयुक्त होते हैं। इनका व्यवहार परिस्थिति के अनुरूप होता है।

6. असामान्य व्यक्तियों में ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक पक्षों के बीच समन्वय का अभाव होता है, परन्तु सामान्य व्यक्तियों का व्यक्तित्व संतुलित होता है।

7. असामान्य व्यक्ति त्रुटिपूर्ण व्यवहारों के लिए पश्चाताप नहीं करते, जबकि सामान्य व्यक्ति को अपनी गलतियों पर पश्चाताप का अनुभव होता है।

प्रमुख मानसिक विकृतियाँ
(Major Psychological Disorders)

➤ **प्रश्न : अथर्ववेद में मानसिक विकारों की उत्पत्ति में किसको आधार माना गया है?**

उत्तर : अथर्ववेद में अत्यधिक आसक्ति तथा सत्व एवं रजस गुणों की तुलना में तमस् गुण की प्रबलता को मानसिक विकारों की उत्पत्ति का आधार माना गया है।

➔ **प्रश्न : मानसिक विकारों के प्रकारों के नाम बताइए।**

उत्तर : प्रमुख मानसिक विकार निम्नलिखित हैं –

(1) चिंता मनोविकृति,
(2) दैहिक आधार की मनोविकृति,
(3) विच्छेदनकारी विकृतियाँ,
(4) मनोभाव विकृतियाँ,
(5) मनोविदालक एवं संभ्रमात्मक विकृतियाँ,
(6) मादक पदार्थ सम्बन्धी विकृतियाँ,
(7) बचपन एवं किशोरावस्था की व्यवहार-गत विकृतियाँ,
(8) व्यक्तित्व सम्बन्धी मनोविकृतियाँ।
(9) समाज-विरोधी व्यक्तित्व सम्बन्धी मनोविकृतियाँ।

Scanned by CamScanner

➔ **प्रश्न : दुर्भीति मनोविकृति (Phobia) से आप क्या समझते हैं?**

▶ ***अथवा,* फोबिया (दुर्भीति) किसे कहते हैं?**

▶ ***अथवा,* फोबिया क्या है? इसके कारणों का वर्णन कीजिए।**

उत्तर : जब कोई व्यक्ति असामान्य रूप से किसी वस्तु या स्थिति से अनुपात से अधिक भयभीत होता है और उनसे बचने के क्रम में अपने जीवन को और भी अधिक दुःखदायी बना देता है तो इस मनोवैज्ञानिक रोग को दुर्भीति (फोबिया)मनोविकृति कहते हैं।

भय या डर की अनुभूति एक सामान्य घटना है जो प्रायः सभी व्यक्तियों में सामान्य रूप से उत्पन्न होता है। जैसे, बच्चे अंधेरे से डरते हैं; वयस्क व्यक्ति कब्रिस्तान इत्यादि से डरते हैं। लेकिन कुछ लोग इन प्रकारों के सामान्य भय के अतिरिक्त कुछ विकृत स्वरूप का भय भी विकसित या अर्जित कर लेते हैं जिसे फोबिया कहते हैं।

यह व्यक्ति का निराधार भय है। खुली छत, खुले बड़े मैदांनी स्थान, पहाड़ पर चढ़ने या विशिष्ट जीव-जन्तु से डर, अत्यधिक भीड़ से डर आदि फोबिया के उदाहरण हैं। भय जिस वस्तु या परिस्थिति से अनुकूलित होकर आसक्त होता है, उसी के अनुसार उसका नामकरण भी किया जाता है। इस

Scanned by CamScanner

नामकरण में लैटिन के प्रत्ययों के साथ फोबिया शब्द जोड़ा जाता है- जैसे एग्रोफोबिया (खुले बड़े मैदानी स्थान से फोबिया), एक्रोफोबिया, हाइड्रोफोबिया (पानी से फोबिया) इत्यादि। इसी प्रकार कुछ लोगों को मंच पर बोलते समय या अजनबी से बात करते समय आवाज खो जाने का अतार्किक भय होता है। इन्हें सामाजिक दुर्भीति कहते हैं। जीव-जन्तु जैसे चूहों, बिल्ली से डर को जूफोबिया कहते हैं।

फोबिया ग्रीक के फोबस (Phobos) शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है – डर। फोबिया मनोविकार के संदर्भ में विकृति या दूषित भय को कहते हैं जो अयुक्तिक स्वरूप का होता है। इस प्रकार के भय का शिकार व्यक्ति भी जानता है कि उनके भय का कोई वास्तविक कारण नहीं है, फिर भी वह भय से मुक्त नहीं हो पाता है। क्योंकि व्यक्ति आन्तरिक रूप से चिंतित रहता है उसकी चिन्ता किसी विशेष वस्तु से अनुकूलित होकर संलग्न हो जाती है। व्यक्ति इस अनुकूलित चिन्ता का परिहार करने का प्रयास करता है उसके भय की प्रतिक्रिया भी इसी प्रयास का प्रतिफल होता है।

➤ **प्रश्न : एग्रोफोबिया किसे कहते हैं?**

उत्तर : जब किसी व्यक्ति को खुले बड़े मैदानी स्थानों से अतार्किक भय होता है तो उसे एग्रोफोबिया कहते हैं।

मनोग्रस्ति-बाध्यता विकार (Obsessive-Compulsive Disorder)

➔ **प्रश्न : मनोग्रस्ति (Obsessions) और बाध्यता (Compulsions) के बीच विभेद स्थापित कीजिए।**

▶ ***अथवा,* मनोग्रस्तता मनोबाध्यता विकार क्या है?**

उत्तर : मनोग्रस्ति और बाध्यता एक ही रोग "मनोग्रस्ति-बाध्यता" के दो पहलू हैं। इन दोनों पहलुओं में विभेद स्थापित करने के लिए उनका अलग-अलग वर्णन करना उचित होगा।

1. मनोग्रस्ति (Obsessions) : यह चिन्तन सम्बन्धी या वैचारिक बाध्यता का रोग है। इस तरह के रोगी किसी भावी अशुभ की चिन्ता से ग्रस्त रहते हैं, उनके मन में बरबस उलुल-जुलूल के विचार आते रहते हैं। उनमें असंगत, अतार्किक विचारों के प्रवाह स्वच्छन्द रूप से उत्पन्न होते रहते हैं। अतः मनोग्रस्ति की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैं –

(i) मनोग्रस्ति संज्ञानात्मक या धारणात्मक (Cognitional or Ideational) बाध्यता को कहते हैं जो केवल मानसिक विचारों के रूप में संज्ञानात्मक स्तर पर अभिव्यक्त होती है।

(ii) इसके रोगी में बार-बार अतार्किक एवं असंगत विचार आते रहते हैं।

(iii) रोगी के मन में आने वाले ये विचार रोगी की इच्छा के विरुद्ध आते रहते हैं तथा इन पर रोगी का कोई नियंत्रण नहीं होता।

2. बाध्यता (Compulsions) : बाध्यता का रोगी केवल वैचारिक स्तर पर सक्रिय नहीं रहता, बल्कि किसी अनुष्ठान की तरह अवांछित, अनर्गल एवं असंगत क्रियाएँ बार-बार दोहराता रहता है। ऐसी क्रियाएँ करना उसकी बाध्यता रहती है अर्थात् रोगी न चाहते हुए भी किसी क्रियाविशेष को बार-बार करते रहने के लिए बाध्य रहता है। जैसे ताला ठीक से लगा रहने पर भी बार-बार देखना, सदा उँगली बजाते रहना, चाबी घुमाना, बार-बार साबुन से हाथ धोना।

अतः कहा जा सकता है कि –

(i) बाध्यता एक प्रतिक्रियात्मक प्रतिक्रिया है जो एक विशेष प्रकार की क्रियात्मक चेष्टा के रूप में प्रकट होती है।

(ii) इसमें रोगी किसी क्रियाविशेष को बार-बार दोहराता रहता है।

Scanned by CamScanner

(iii) यह क्रिया अवांछित, अतार्किक एवं असंगत स्वरूप की होती है जिस पर रोगी का कुछ भी नियंत्रण नहीं रहता तथा वह इनके अतार्किक एवं अवांछित स्वरूप से अवगत रहता है।

▶ **प्रश्न : दुश्चिंता मनोविकृति के उपचार (Treatment) क्या हैं?**

उत्तर : चिन्ता-मनस्ताप का रोगी यद्यपि उपचार के प्रति पर्याप्त अनुकूल प्रतिक्रिया करता है किन्तु फिर भी उसमें व्याप्त diffused general anxiety पूरी तरह से बहुत ही कम ठीक होती है। सामान्यतः उसकी चिन्ता उस सीमा तक तो सरलता से कम की जा सकती है जिससे वह उचित समायोजन स्थापित कर सकने में समर्थ हो जाय। रोगी के ऊपरी लक्षणों को तो साधारण मनोपचार से दूर किया जा सकता है, किन्तु चिन्ता के कारण दूर करने हेतु उचित तथा लम्बे मनोपचार की आवश्यकता है।

▶ **प्रश्न : भ्रान्ति (Delusion) एवं विभ्रम (Hallucination) क्या हैं?**

उत्तर : भ्रान्ति (Delusion) : किसी उत्तेजक का गलत ज्ञान प्राप्त होना भ्रान्ति कहलाता है। उदाहरण के लिए रात में पेड़ के तने को देखकर भूत समझना। उसी तरह बहुत दूर पर आकाश और धरती का मिले हुए नजर आना भी भ्रान्ति का उदाहरण है।

विभ्रम (Hallucination) : विभ्रम एक ऐसी मानसिक क्रिया है जिसमें कोई बाह्य उत्तेजक हमारी ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित नहीं करता है। हम कह सकते हैं कि विभ्रम भी भ्रान्ति की तरह एक गलत ज्ञान है। अन्तर केवल इतना है कि भ्रान्ति में व्यक्ति को उत्तेजक का गलत ज्ञान होता है, लेकिन विभ्रम में कोई उत्तेजक उपस्थित नहीं रहता। वस्तुतः विभ्रम एक ऐसा गलत ज्ञान होता है जिसकी उत्पत्ति मानसिक वृत्ति के कारण होती है। जैसे-किसी व्यक्ति विशेष के मन में भूत-प्रेत का पहले से एक विचार बना रहता है और यदि अँधेरे में वह व्यक्ति किसी एकान्त स्थान पर जाता है तो उसे ज्ञात होता है कि एक भूत चला आ रहा है।

Scanned by CamScanner